सम्पर्क भाषा

सम्पर्क शब्द अँग्रेजी के लिंक शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। ऐसी भाषा जो अलग - अलग भाषाओं को बोलने वाले लोगों को जोड़ती है। उसे सम्पर्क भाषा कहते हैं। सम्पर्क भाषा का महत्व बहुभाषी देश में ज्यादा होता है। ऐसे देशों में दैनन्दिन जीवन की जरूरतों से लेकर राष्ट्रीय स्तर के कार्यों के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जो वहाँ की विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले लोगों के सम्पर्क का माध्यम बन सके।

जिस किसी देश में भी बहुभाषिक संस्कृति होती है वहाँ सम्पर्क भाषा की नितान्त आवश्यकता होती है। कभी - कभी ऐसा भी होता है कि किसी देश में एकाधिक भाषाओं को भी सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे भारत में हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी समर्थ भाषा के रूप में किया जा रहा है।

सम्पर्क भाषा जन-सामान्य की जरूरतों की भाषा होती है। जन - साधारण की इच्छा के अनुरूप ही शासन तंत्र उसका ग्रहण या त्याग करता है। शासन - व्यवस्था चाहकर भी सम्पर्क भाषा को नियंत्रित नहीं करा सकती। जैसे भारत - सरकार की भाषा - नीति - तमिलनाडु सरकार प्रशासन एवं शिक्षा दोनों स्तरों पर लागू नहीं करती। भले ही शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों में हिन्दी पहले की अपेक्षा संतोषजनक नहीं है, पर शासकीय तौर पर हिंदी के बहिष्कार के बावजूद सम्पूर्ण देश से जुड़ने के लिए लोग सम्पर्क भाषा के ज्ञान की आवश्यकता महसूस करने के कारण विभिन्न माध्यमों से हिंदी सीखते हैं।

सम्पर्क भाषा को देश की शैक्षिक व्यवस्था से जोड़ना आवश्यक होता है, क्योंकि शिक्षा एवं ज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध देश की सम्पर्क भाषा से होता है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को सम्पर्क भाषा सिखाई जाती है, ताकी आगे चलकर वे सरलतापूर्वक देश के कार्यकलाप से जुड़ सकें। शासन व्यवस्था के संचालन में भी सम्पर्क भाषा की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

किसी भाषा को सम्पर्क भाषा बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसका प्रचलन हो, साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह भाषा जीवन के विविध कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हो। धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, व्यापारिक, शिल्प, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन के क्षेत्रों में इस भाषा का अधिकाधिक उपयोग हो।

जीवन के अत्यंत आवश्यक कार्यों के लिए इसका प्रयोग होता है। सैनिकों के प्रशिक्षण एवं संचालन के निमित्त तथा उनमें सूचनाओं एवं विभिन्न विचारों के सम्प्रेषण के लिए सम्पर्क भाषा की आवश्यकता अखिल भारतीय स्तर पर होने वाले ऐसे कार्यों के लिए सम्पर्क भाषा प्रयुक्त की जाती है। सम्पर्क भाषा का प्रयुक्त कर व्यक्ति अपना काम सरलतापूर्वक चला सकता है।

हिन्दी राजनीतिक कारणों से भी सम्पर्क भाषा बनी। व्यापक कारण से भी हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा बनी। कुल मिला जुला कर कहा जा सकता है कि सम्पर्क भाषा द्वारा हम एक-दूसरे को आसानी से जान जाते हैं और अपनी बातों का आदान-प्रदान हो जाता है। अतः सम्पर्क भाषा हमारे जीवन में ज्योति (प्रकाश, चमत्कार) ले कर आती है।

aman